नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

कचरा संकट पर सुप्रीम कोर्ट का महत्वपूर्ण निर्णय

देश में बढ़ते कचरे के पहाड़, दम तोड़ती नदियां, जहरीली होती हवा और शहरों की बिगड़ती सेहत के बीच सुप्रीम कोर्ट का ताजा फैसला केवल एक न्यायिक आदेश नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतावनी है. भोपाल के एक पर्यावरणविद् की याचिका पर शीर्ष अदालत ने जिस प्रकार सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की निगरानी अपने हाथ में लेते हुए छह सदस्यीय सुप्रीम कोर्ट एम्पॉवर्ड मॉनिटरिंग कमेटी (एससीएमसी) गठित की है, वह बताता है कि अब कचरा प्रबंधन को केवल नगर निगमों की सीमित जिम्मेदारी मानने का दौर समाप्त होना चाहिए.

देश के अधिकांश शहर आज 'लीगेसी वेस्ट' यानी वर्षों से जमा कचरे की भयावह समस्या से जूझ रहे हैं. दिल्ली, मुंबई, भोपाल, इंदौर, चेन्नई और कोलकाता जैसे महानगरों में कचरे के पहाड़ पर्यावरणीय आपदा का रूप ले चुके हैं. विडंबना यह है कि स्व'छता अभियान, स्मार्ट सिटी और हरित विकास जैसे बड़े नारों के बावजूद कचरा प्रबंधन की जमीनी स्थिति अब भी चिंताजनक बनी हुई है. ऐसे समय में सुप्रीम कोर्ट की सख्ती प्रशासनिक तंत्र को जवाबदेह बनाने की दिशा में बड़ा कदम है.

अदालत ने स्पष्ट कर दिया है कि अब किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश को लीगेसी वेस्ट निपटान के लिए अतिरिक्त समय नहीं मिलेगा. यह संदेश महत्वपूर्ण है, क्योंकि वर्षों से पर्यावरणीय नियमों के पालन में देरी को सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया मान लिया गया था. अब जवाबदेही तय होगी और लापरवाही पर कार्रवाई भी. इस फैसले का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने कचरा प्रबंधन को केवल सरकारी काम मानने की मानसिकता पर चोट की है. अदालत ने महात्मा गांधी के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि जब हर व्यक्ति कचरा पैदा करता है तो उसकी जिम्मेदारी भी सभी की होनी चाहिए. वास्तव में भारत में स्व'छता को अब भी 'दूसरे का काम' समझने की सामाजिक प्रवृत्ति मौजूद है. लोग घर साफ रखते हैं, लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फैलाने में संकोच नहीं करते. यही सोच शहरों को गंदगी और बीमारियों की ओर धकेलती है.

स्कूली पाठ्यक्रम में कचरा प्रबंधन को शामिल करने का निर्देश दूरगामी महत्व रखता है. पर्यावरण संरक्षण केवल कानूनों से नहीं, बल्कि व्यवहार परिवर्तन से संभव होता है. यदि बचपन से ही कचरा पृथक्करण, रिसाइक्लिंग और स्व'छता की संस्कृति विकसित की जाए तो आने वाले वर्षों में स्थिति बदल सकती है. विकसित देशों में नागरिक अनुशासन ही स्वच्छता की सबसे बड़ी ताकत है. सुप्रीम कोर्ट ने कलेक्टरों को अवैध डंपिंग और अनधिकृत कचरा परिवहन पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं. साथ ही वेबसाइट पर प्रगति और फोटो अपलोड करने का आदेश प्रशासनिक पारदर्शिता की दिशा में सकारात्मक पहल है. इससे जनता निगरानी प्रक्रिया का हिस्सा बन सकेगी.

यह भी सच है कि केवल कमेटियां बनाना पर्याप्त नहीं होगा. नगर निकायों की क्षमता बढ़ाना, आधुनिक प्रोसेसिंग प्लांट स्थापित करना, स्रोत स्तर पर कचरा पृथक्करण लागू करना और नागरिक भागीदारी सुनिश्चित करना समान रूप से आवश्यक है. भारत यदि 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का सपना देखता है तो स्व'छ और टिकाऊ शहर उसकी अनिवार्य शर्त होंगे. सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है कि स्व'छता केवल अभियान नहीं, बल्कि संवैधानिक जिम्मेदारी है. अब देखना यह होगा कि सरकारें, प्रशासन और नागरिक इस चेतावनी को कितनी गंभीरता से लेते हैं.

एआई का जनजातीय भाषाओं में संवाद

समावेशी विकास का द्योतक

रंजना चोपड़ा

हमारे देशभर में फैले जंगलों, पहाड़ियों और दूरदराज की बस्तियों में एक शांत लेकिन सफल परिवर्तन चल रहा है. जनजातीय समुदाय लंबे समय से भारत की विकासगाथा के केंद्र में अपने उचित स्थान का इंतजार कर रहे थे। आज वे राष्ट्र की प्रगति के सक्रिय वास्तुकार के रूप में उभर रहे हैं.जनजातीय गरिमा उत्सव की यही भावना है — विकसित भारत की यात्रा का एक राष्ट्रीय उत्सव, जहाँ प्रगति भूगोल या परिस्थिति का विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का समान अधिकार है.

> समावेशन की यही भावना इस बात को आकार दे रही है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को जनजातीय विकास के साथ कैसे जोड़ा जा रहा है.इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में मंत्रालय ने एआई-सक्षम प्लेटफॉर्मों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की, जो इस सरल लेकिन दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि भाषा कोई बाधा नहीं है जिसे दूर किया जाए, बल्कि एक पहचान है जिसका उत्सव मनाया जाना चाहिए. आदिवाणी, जनजातीय भाषाओं के लिए एआई-संचालित अनुवादक, टेक्स्ट-टू-टेक्स्ट और टेक्स्ट-टू-स्पीच अनुवाद, ओसीआर तथा आदिवासी भाषाओं में सरकारी योजनाओं की जानकारी के वितरण का समर्थन करता है, जिससे नागरिकों को घर पर बोली जाने वाली भाषा में सार्वजनिक सेवाओं से जुड़ने में सहायता मिलती है। ट्राइबॉट, एक बहुभाषी संवादात्मक एआई सहायक, दूरदराज के क्षेत्रों में नागरिकों को त्वरित मार्गदर्शन और शिकायत निवारण सहायता प्रदान करके इस प्रयास को और मजबूत करता है.

यह समझने के लिए कि प्रौद्योगिकी जनजातीय विकास के लिए अपरिहार्य क्यों हो गई है, किसी को पहले चुनौती की व्यापकता को समझना चाहिए. प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन), धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान (डीएजेजीयूए), राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन और संबंधित पहलों में 549 जिलों और 30 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के 2,911 ब्लॉकों के 63,000 से अधिक गाँवों को शामिल किया गया है, जिससे 5.5 करोड़ से अधिक आदिवासी नागरिक लाभान्वित हुए हैं.विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) पर विशेष ध्यान देने के साथ, इन प्रयासों का उद्देश्य आवास, पेयजल, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, कनेक्टिविटी और आजीविका जैसी आवश्यक सेवाओं का सम्पूर्ण कवरेज सुनिश्चित करना है.

इस तरह के विविध और विस्तृत इलाके में हर परिवार तक पहुँचने के लिए ऐसी प्रणाली की आवश्यकता होती है जो डेटा-संचालित, कनेक्टेड और उत्तरदायी हो — और यही हम तैयार कर रहे हैं. इस वर्ष जनजातीय गरिमा उत्सव का आयोजन लगभग चार विषयगत सप्ताहों के आसपास किया जा रहा है, जो एक साथ जनजातीय विकास के पूर्ण आयाम को दर्शाते हैं. उद्घाटन का विषय — विकास के एक वाहक के रूप में प्रौद्योगिकी — इस बात को दर्शाता है कि कैसे डिजिटल सिस्टम, विज्ञान और नवाचार भारत के कुछ दूरस्थ समुदायों तक शासन और अवसर का विस्तार कर रहे हैं.इस दृष्टिकोण के केंद्र में एक सरल सिद्धांत निहित है ॰ जनजातीय भाषाओं, संस्कृतियों, विरासत और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का पर्याप्त सम्मान करते हुए विकास को अंतिम दूरी तक पहुँचना चाहिए.

उद्देश्य के साथ निर्देशित होने पर प्रौद्योगिकी क्या हासिल कर सकती है, इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण बिरसा 101 है — सिकल सेल रोग के लिए भारत की पहली स्वदेशी सीआरआईएसपीआर-आधारित जीन थेरेपी.सिकल सेल रोग लंबे समय से जनजातीय आबादी के लिए स्वास्थ्य की एक बड़ी चुनौती पेश कर रहा है और भारत अब समानता और पहुँच में निहित उन्नत विज्ञान के साथ उस चुनौती का जवाब दे रहा है.जनजातीय कार्य मंत्रालय ने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), सीएसआईआर-इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आईजीआईबी) और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से अनुसंधान, नैदानिक परीक्षण अवसंरचना और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को समर्थन देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है.सीएसआईआर-आईजीआईबी में हाल ही में आयोजित एक संगोष्ठी में वैज्ञानिकों, नीति-निर्माताओं और सिकल सेल योद्धाओं को एक साथ लाया गया, जो वैज्ञानिक प्रगति और इन प्रयासों के पीछे की मानवीय तात्कालिकता — दोनों को दर्शाता है. साझा लक्ष्य स्पष्ट है - एक किफायती, एकमुश्त उपचारात्मक उपचार विकसित करना, जो जरूरतमंद हर आदिवासी परिवार तक पहुँच सके.

बिरसा 101 केवल चिकित्सा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि नहीं है। यह एक घोषणा है कि भारत का सबसे उन्नत विज्ञान अपने सबसे पात्र समुदायों की सेवा करेगा. यह दृढ़ विश्वास एक पहल से कहीं अधिक गहरा है। ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) और आयुर्जेनोमिक्स जैसे प्रयास दर्शाते हैं कि कैसे आधुनिक तकनीक आदिवासी समुदायों द्वारा लंबे समय से संरक्षित समृद्ध औषधीय और पारिस्थितिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण, मान्यीकरण और संरक्षण में मदद कर सकती है।

(लेखिका भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय की सचिव हैं.)

दिल्ली डायरी

मंत्रिमंडल विस्तार की आहट से राजनीतिक हल्कों में बेचैनी

प्रवेश कुमार मिश्र

केन्द्रीय मंत्रिमंडल में फेरबदल की आहट के बाद दिल्ली के सत्ताधारी गलियारों में एक अलग किस्म की बेचैनी महसूस की जा रही है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों जिस तरह से मंत्रिमंडल सहयोगियों की मौजूदगी में एक एक मंत्रालयों का रिपोर्टकार्ड रखते हुए विस्तृत और व्यवहारिक चर्चा की उसके बाद ज्यादातर विभागों में सन्नाटा पसरा हुआ है. जहां एक तरफ मंत्रियों को अपनी कुर्सी की चिंता सताने लगी है वहीं दूसरी ओर वरिष्ठ अधिकारियों को भी कमजोर या खराब प्रदर्शन के आधार पर पदस्थापन का डर लगने लगा है. राजनीतिक हल्कों में लगभग एक दर्जन मंत्रियों की छुट्टी होने की खबर ने दूसरे व तीसरे ग्रेड पाने वाले मंत्रियों को चिंता में डाल दिया है. दिल्ली में डेरा डाले ऐसे तमाम मंत्री संघ व वरिष्ठ मंत्रियों से आशीर्वाद पाकर अपनी कुर्सी बचाने की जुगत में लगे हैं. चर्चा है कि पहली बार राज्यमंत्री बने कुछ मंत्रियों ने कुर्सी जाने के भय से अपने बचाव में वरिष्ठ मंत्रियों द्वारा महत्वपूर्ण जिम्मेदारी नहीं देने की बात कहकर अपने पैरवीकारों से एक और मौका दिलाने की मांग की है.

बिखरते कुनबे और सिकुड़ते जनाधार से टीएमसी बेचैन

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव खत्म होने और टीएमसी पराजय के बाद भी पश्चिम बंगाल का राजनीतिक घटनाक्रम इन दिनों सुर्खियों में है. कभी बंगाल की शेरनी कही जाने वाली पूर्व मुख्यमंत्री व टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी इन अपने कुनबे के नेताओं के आरोपों व उनका साथ छोड़ने की क्रमिक घटना से परेशान हैं. कोलकाता की आंच दिल्ली में भी महसूस की जा रही है. टीएमसी के ज्यादातर वरिष्ठ नेता इन दिनों दिल्ली में हैं. ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी पर जिस तरह से टीएमसी के नेता आरोप लगाकर अपनी राजनीतिक वचनबद्धता में बदलाव कर रहे हैं उसके कारण टीएमसी के रणनीतिकार भी परेशान हैं. हालांकि टीएमसी के कुछ वचनबद्धता नेता अभी भी ममता बनर्जी पर विश्वास समर्पित करते हुए संगठन में मची उथल-पुथल को तात्कालिक प्रतिक्रिया मान रहे हैं. उनका मानना है कि यह परीक्षा की घड़ी है . कुछ दिनों में सब सामान्य हो जाएगा.

बसपाई रूख को भांपकर सपा ने कांग्रेस के साथ जारी तल्खी त्यागी

पश्चिम बंगाल व तमिलनाडु के राजनीतिक परिदृश्य का आंकलन करने तथा बसपा व कांग्रेस के बीच पकती खिचड़ी की भनक लगते ही सपाई रूख में अचानक बदलाव दिखने लगा है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि सपा ने कांग्रेस के साथ अपने गठबंधन को भविष्य में भी जारी रखने की वचनबद्धता दोहराते हुए किसी नए समीकरण के बनने या बनाने के पहले ही पानी डाल दिया है. कांग्रेसी रणनीतिकार भी सपा के इस रूख से खुश हैं उन्हें भी अब लगने लगा है कि सीटों के तालमेल के समय उसे कमजोर आंकलन करने की गलतियां अब सहयोगी नहीं करेंगे. कांग्रेसी नेता इस बदलाव को कांग्रेस संगठन की जमीनी मेहनत के कारण उसकी बढ़ती ताकत का परिणाम मान रहे हैं.

सुर्खियों में रहा कॉकरोच जनता पार्टी

हालांकि भारत की राजनीति में कॉकरोच जनता पार्टी नाम का कोई भी आधिकारिक या पंजीकृत राजनीतिक दल नहीं है बल्कि यह एक व्यंग्यात्मक आंदोलन है. युवाओं व बेरोजगारों को लेकर कथित तौर पर की गई एक टिप्पणी बाद जिस तरह से अभिजीत दीपके के प्रयास से इस पार्टी का नाम सामने आया और मात्र पांच दिन में सोशल मीडिया पर करोड़ों युवा समर्थकों ने इसके साथ अपने को जोड़ा उससे देश की राजनीतिक में एक अलग बेचैनी बढ़ गई थी. हालांकि सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा व लोक व्यवस्था का हवाला देकर इसे भारत में ब्लाक कर दिया है. लेकिन इस प्रयोग व प्रयास ने यह प्रमाणित कर दिया है कि देश के युवाओं व बेरोजगारों के अंदर गुस्से का ज्वार पनप रहा है.

कुश्ती महासंघ को अदालत की फटकार

दिल्ली उच्च न्यायालय ने महिला पहलवान विनेश फोगाट के प्रति अपमानजनक रवैये को लेकर रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया को कड़े शब्दों में फटकारा है. एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की सम्मानित खिलाड़ी को 'राष्ट्रीय शर्म' कहकर फेडरेशन ने दिखाया है कि सफल महिलाओं के प्रति उसका कितना ओछा रवैया है. प्रधानमंत्री बेटी बचाओ और महिला सशक्तिकरण का संदेश देते हैं जबकि खेल संगठन एक ऐसी महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाते हैं जिसने जी जान से कुश्ती लड़कर तथा ओलंपिक व अन्य प्रतियोगिताओं में मेडल जीतकर भारत का गौरव बढ़ाया. एक बार तो सिर्फ 100 ग्राम वजन अधिक निकलने पर विनेश को भाग लेने से रोका गया था जबकि फेडरेशन अपील करता तो उसे लड़ने का मौका मिल जाता. खेल संघ यही चाहता है कि कोई खिलाड़ी मेडल जीते और खामोश रहे. जहां उसने अन्याय का विरोध किया या चुनौती दी, उससे बदला भुनाया जाता है. बीजेपी सांसद और भारतीय कुश्ती महासंघ के तत्कालीन अध्यक्ष ब्रजभूषण शरण सिंह के महिला पहलवानों से अवांछित बर्ताव का मुद्दा उठाकर आंदोलन करने वाली विनेश फोगाट के साहस की सराहना करनी चाहिए लेकिन उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ी. महासंघ का अध्यक्ष अब ब्रजभूषण शरण सिंह का बेटा है और स्थितियों में कोई बदलाव नहीं आया है. प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने घसीटा था. इतने मेडल जीतने और अंतरराष्ट्रीय अनुभव होने पर भी विनेश को ट्रायल देने के लिए कहा जा रहा है. क्या मां बनने के बाद कोई खिलाड़ी अपना खेल जारी नहीं रख सकती? अन्य देशों में इसे लेकर कोई रोक-टोक नहीं है. अदालत को विनेश फोगाट के मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा. खेल संगठनों को तानाशाही तरीके से आचरण नहीं करना चाहिए. राष्ट्र की शान बढ़ाने वाली महिला खिलाड़ी के साथ उपेक्षा व अपमान हरगिज बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

राम ने धोए थे निषादराज के पैर! अमित शाह का कथन बेसिर-पैर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, दिल्ली के जनजातीय सांस्कृतिक समागम में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि जो लोग हमें बांटना चाहते हैं वे यह नहीं जानते कि जब निषादराज ने मदद का हाथ बढ़ाया, तो भगवान श्रीराम ने स्वयं निषादराज के पैर गंगाजल से धोकर वनवासियों का सम्मान किया था. शाह का यह कथन हैरत में डाल देता है. उन्होंने सरासर गलत व उल्टी बात कही है, जो किसी भी रामायण में नहीं है. निषादराज या केवट ने राम, सीता व लक्ष्मण को अपनी नाव से गंगा पार कराने के पहले शर्त रखी थी कि राम पहले उससे अपने चरण धुलवा लें तभी वह उन्हें नाव में बिठाएगा. केवट का कहना था कि जब आपके चरणस्पर्श से पत्थर की शिला नारी बन गई तो मेरी नाव भी कहीं नारी न बन जाए. फिर मेरी रोजी-रोटी कैसे चलेगी! वह कठौते में पानी भरकर लाया और राम के चरण अच्छी तरह पखारे इसके बाद ही उन्हें नाव में बिठाया. जब गंगा पार करने के बाद राम उसे उतराई (पारिश्रमिक) के रूप में रामायण अपनी अंगूठी देने लगे तो उनसे लेने से मना करते हुए कहा कि एक भाई दूसरे भाई से उतराई कैसे ले सकता है? मैंने यहां आपको पार करवाया. मरने के बाद आप मुझे भवसागर से पार लगा देना.'

हमने कहा, 'अमित शाह राजनेता हैं, धार्मिक प्रवचनकार नहीं. उन्हें रामायण पढ़ने की फुरसत ही कहां है? जैसा मन में आया, कह दिया. विद्वत्ता और मंत्री पद का आपस में कोई रिश्ता नहीं है. उनका आशय था कि लोगों को लालच देकर धर्म बदलने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता. संविधान निर्माताओं ने हर व्यक्ति को अपने मूल धर्म में आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार दिया है. हमें धर्म की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए.'

पड़ोसी ने कहा, 'आशय अपनी जगह है लेकिन उदाहरण हमेशा सही देना चाहिए. नहीं मालूम तो चुप रहना चाहिए. शाह ने अनूप जलोटा का भजन सुना होता तो उन्हें वास्तविकता पता होती. इस भजन के बोल हैं- कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े, जाना था गंगा पार, प्रभु केवट की नाव चढ़े! एक अन्य भजन है- मेरी छोटी सी ये नाव तेरे जादू भरे पांव, मोहे डर लागे राम, कैसे बिठाऊं तुम्हें नाव में! अमित शाह चाहें तो यू-ट्यूब पर यह भजन सुन लें. उन्हें समझ में आ जाएगा कि किसने किसके चरण धोए!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12270
- डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	4	■	5	6
	■	7			8	■	
9	10			■	11	12	
13		■	■	14			■
15		16	17	■	18		19
■	20			21	■	22	
23		■	24		■	25	
26			■	27			

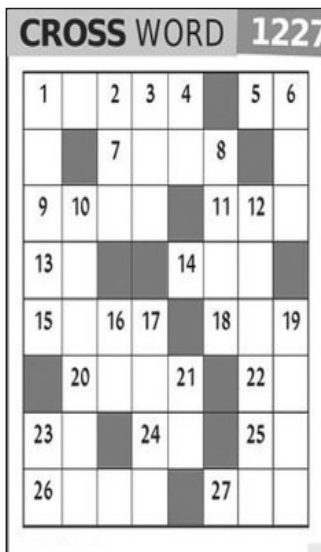

बाएं से दाएं
1. नमक निकालने या बनाने का स्थान 5. घोड़े की जाति का एक प्रसिद्ध चौपाया, खर, मूर्ख 7. वन में रहने वाला व्यक्ति 9. कैंची या सरौते से काटना, बात काटने वाला व्यक्ति 11. दौड़कर चलने वाला व्यक्ति, हरकारा (सं.) 13. गहरा, गड्ढा, गुफा, गाली 14. पारस्परिक 15. दोष निकालना 18. आंख, नेत्र 20. आकाश (सं.) 22. आर्द्र, गीला, शीतल 23. रखने वाला, पत्नी, सूली, फांसी 24. रात्रि, रात 25. माप, नापने का काम, परिमाण 26. स्वभाव से दानी 27. जामाता, जमाई, कन्या का पति

ऊपर से नीचे
1. नरक में जाने वाला 2. केशपाश, कौर (सं.), आवरण-पृष्ठ (अं.) 3. मांडना, लपेटना, सान पर धार तेज करना 4. कण, दाना, सूजी 6. धारण करने वाला (सं.) 8. सरलता, भोलापन 10. उद्धार, निस्तार, भवसागर से पार करने वाला (ईश्वर) 12. वह लेख जिसमें वसीयत की गई हो 16. 'मैं' का संबंधकारक रूप 17. खपड़े की छाई हुई छत 19. नगर, देश (सं.) 21. चौपायों के स्तन 23. पिता का पिता, बड़ा भाई

Solution 12269

शा	लं	का	य	न	■	सा	ह
स	का	म	■	म	■	र	वा
नि	■	ना	न	क	पं	थी	■
क	ज	■	त	■	क	■	आ
■	ल	ला	म	■	■	■	च
■	स	म	स्त	■	स	रू	र
ज	मा	■	क	रा	रो	प	ण
ब	धि	र	■	मा	द	क	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भवन संबंधी विवाद का सामना करना पड़ेगा, व्यर्थ वाद विवाद से मतभेद बढ़ेगा, वर्ष के मध्य में रचनात्मक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, व्यापार व्यवसाय में प्रगति होगी, राज सम्मान एवं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार में प्रगतिहोगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख प्राप्त होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मनोबल में वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा और सम्मान की प्राप्ति होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्योमें सफ्लता प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्वान होगा. बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. स्वाभाव से चंचल और जिद्दी होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. खेलों के प्रति अधिक रूचि रखेगा. किसी कला के क्षेत्र में उन्नति करेगा.

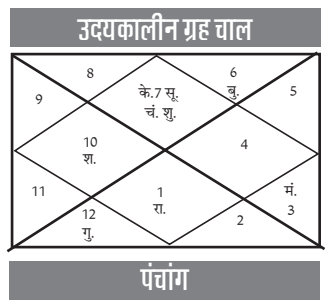

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी बुधवासरे दिन 7/50, हस्त नक्षत्रे दिन 7/46, सिद्धि योगे प्रात: 5/20 तदुपरि व्यतिपात योगे रात 4/52, विष्टि करणे सू.उ. 5/18, सू.अ. 6/42, चन्द्रचार कन्या रात 8/27 से तुला, पर्व- पुरूषोत्तमी एकादशी व्रत, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, बाजरा के भाव में जोरदार तेजी होगी, गुड़ खांड़, में नरमी का रूख रहेगा, बादाम मीन, के भाव में समता रहेगी. भाग्यांक 1415 है.

मेष- मित्र या रिश्तेदार की मदद करना होगी, राजकीय कार्यो में सफ्लता मिलेगी, नौकरी में लाभ होगा, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

वृषभ- पैतृक संपत्ति संबंधी विवाद सामने आ सकते हैं, महत्वपूर्ण निर्णय अभी टाल दें, कोई समस्या दूर होगी, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

मिथुन- महत्वपूर्ण कार्य अटक सकते हैं, सावधानी रखकर कार्य करें, समय का सदुपयोग करें, किसी तरह की चोट मोच से शारीरिक कष्ट हो सकता है.

कर्क- घर की साज सज्जा नवीनीकरण का मन बनेगा, उच्च शिक्षा का अवसर मिलेगा, पारिवारिक चिन्ता रह सकती है, कार्यो में प्रगति होगी.

सिंह- आप योजनाओं को समय से पहिले पूरा कर सकते हैं, जिससे अच्छा लाभ होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, भागदौड़ अधिक करना होगा,व्यर्थ की चिन्ता रहसकती है.

कन्या- कार्यक्षेत्र में सफ्लता के लिये नई तकनीक सीख सकते हैं, लेखनादि के कार्यो मे सफ्लता मिलेगी, संतान प्राप्ति एवं सुख प्राप्ति का योग है.

तुला- नये कारोबार का मन बन सकता है, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा, यश मिलेगा. भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, खर्च की अधिकता रहेगी.

वृश्चिक- विवादास्पद मामलों से अभी आप दूर रहें, रोगी के कार्यो में खर्च होगा, किसी उत्सव में जाने का अवसर मिलेगा, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

धनु- आप किसी के साथ मिलकर नई साझेदारी कर सकते हैं, कामकाज पूरा होगा, कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफ्लता प्राप्त होगी, व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

मकर- दूसरों की पूँजी का उपयोग कर आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं,धन के स्त्रोत बढ़ेंगे, कुटुम्बियों से सुख प्राप्त होगा, निजी पुरूषार्थ की प्राप्ति होगी.

कुम्भ- परिवार में समझौते करके चलना लाभकारी रहेगा, घरेलू यात्रा का योग है, अनावश्यक कार्यो में समय खर्च होगा, दौड़धूप करना पड़ेगी.

मीन- करीबी रिश्तेदारों की चिन्ता होगी, शुभ कार्यो की शुरूआत संभव है, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा, सम्मान प्राप्त होगा. उन्नति होगी.

SUDOKU 7402

					1	4		
	9					5	8	
			7	9				
			2				6	7
4								3
5	8				9			
				8	5			
	7	6					1	
		9	3					

॰ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ॰ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ॰ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7401

7	8	9	2	3	1	6	5	4
3	2	4	6	5	9	7	8	1
6	5	1	8	4	7	2	9	3
5	1	7	3	9	8	4	6	2
4	6	8	5	1	2	9	3	7
9	3	2	4	7	6	8	1	5
1	4	6	9	2	3	5	7	8
2	9	3	7	8	5	1	4	6
8	7	5	1	6	4	3	2	9